



सीएसआईआर

प्रगति, विकास और आशा समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 3 अंक 12

website: <http://www.csir.res.in>

दिसम्बर 2015

इस अंक में

181 सीएसआईआर ने अपना 73वां स्थापना दिवस मनाया

183 सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान 2015

185 विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर (एसएसबी) पुरस्कार 2015

186 सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2015

188 सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2015

192 जीवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता के लिए जी.एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक - 2014 एवं 2015

193 ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार-2014

194 सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान का 62वां वार्षिक दिवस

196 डॉ. सामित चट्टोपाध्याय ने सीएसआईआर-आईआईसीबी के निदेशक का पदभार संभाला

सीएसआईआर ने अपना 73वां स्थापना दिवस मनाया



केन्द्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के दौरान जनसभा को सम्बोधित करते हुए

केन्द्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री तथा उपाध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, डॉ. हर्षवर्धन ने देश की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए सीएसआईआर की सम्पूर्ण सक्षमता को संरचनात्मक ढंग से संगठित करने के लिए आह्वान किया। सीएसआईआर स्थापना दिवस के अवसर पर बोलते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि वे प्रयोगशालाओं में हो रहे विविध अनुसंधानों यथा हवाई जहाज

से नैनोमैटिरियल तक आयुरेजीनामिक्स से नवीन औषधि तथा पेट्रोलियम तक से बहुत गर्वित हैं।

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने 26 सितम्बर 2015 को अपना 73वां स्थापना दिवस मनाया। यह समारोह विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। स्थापना दिवस व्याख्यान श्री ए.एस. किरण कुमार, सचिव, अंतरिक्ष विभाग तथा अध्यक्ष, इसरो द्वारा दिया गया।



केन्द्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के दौरान जनसभा को सम्बोधित करते हुए

डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि जहां वर्ष 1942 में प्रत्येक व्यक्ति देश की आजादी की लड़ाई में लिप्त था, उसी समय पर सीएसआईआर जैसे अस्तित्व के जन्म की बात सोच पाना भी असंभव था। उन्होंने कहा कि महान व्यक्तियों ने सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की नींव रखी तथा ऐसे महान व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने के लिए हमारे पास शब्द भी नहीं हैं। उन्होंने कहा कि वे सीएसआईआर की अधिकतर प्रयोगशालाओं का दौरा कर चुके हैं, वैज्ञानिकों से चर्चा कर चुके हैं तथा उन महान कार्यों का जायजा ले चुके हैं जो ये प्रयोगशालाएं कर रही हैं। मंत्री महोदय ने कहा कि हमें इस दिवस पर सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा किए जा रहे विश्वस्तरीय अनुसंधानों की विशेष रूप से सराहना करनी चाहिए।

यद्यपि, उन्होंने कहा कि आज भी हमारे देश की अधिकतर आबादी न केवल उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी से वंचित है बल्कि उन्हें आधारभूत प्रौद्योगिकी सुविधाएं भी प्राप्त नहीं हो पा रही हैं। इसी में सीएसआईआर के लिए बड़ी चुनौती है, उन्होंने कहा। डॉ. हर्षवर्धन ने यह भी कहा कि अनुसंधान गतिविधियों में और अधिक सहक्रिया की आवश्यकता है क्योंकि

बहुत-सी एक जैसी गतिविधियां विभिन्न स्थानों पर चल रही हैं, जिनके विषय में प्रतिभागियों को ज्ञात भी नहीं है। उन्होंने हमारी सक्षमताओं के आत्मविश्लेषण, अंतरालों को दूर करने के तरीकों तथा भविष्य की योजनाओं के लिए आह्वान किया।

इससे पूर्व अपने स्वागत सम्बोधन में डॉ. गिरीश साहनी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने कहा कि स्थापना दिवस विज्ञान का उत्सव बनाने का अवसर है। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर में हमारा एक सपना है - एक खूबसूरत परिदृश्य में सस्ती व्यापक रूप से उपयोग में लाई जाने वाली औषधियां, हरित क्रान्ति; औषधीय पौधे तथा अन्य बहुत कुछ समाहित है। उन्होंने कहा कि हमें कृषकों तथा रोगियों की सहायता के लिए उपयोगी अत्याधुनिक विज्ञान की आवश्यकता है।



डॉ. गिरीश साहनी, महानिदेशक, सीएसआईआर स्वागत सम्बोधन देते हुए

डॉ. साहनी ने कहा कि हमें चुस्त तथा कार्यान्वित हो सकने वाले समाधानों की आवश्यकता है ताकि हम सीएसआईआर को न केवल प्रासंगिक बना सकें अपितु अपरिहार्य बना सकें। उत्कृष्टता तथा सुपुर्दगी साथ-साथ होनी चाहिए, उन्होंने कहा।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री वाई.एस. चौधरी ने कहा कि स्थापना दिवस जैसे अवसरों का प्रयोग



श्री वाई.एस. चौधरी जनसमूह को सम्बोधित करते हुए

स्वयं को विज्ञान तथा वैज्ञानिक विकासों के लिए पुनः समर्पित करने के लिए करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर ने देश के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सीएसआईआर द्वारा विकसित ऐसी बहुत-सी प्रौद्योगिकियां हैं जो जनसाधारण तक पहुंच सकी हैं।

यद्यपि, उन्होंने इन्फोसिस के श्री नारायण मूर्ति की टिप्पणियों को इंगित करते हुए कहा कि पिछले 60 वर्षों में हमारी किसी भी वैज्ञानिक संस्थापनाओं से कोई भी उपयोगी प्रौद्योगिकी अथवा अनुसंधान नहीं प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें ऐसी टिप्पणियों को गंभीरता से लेना चाहिए। लोकतंत्र में ऐसे दृष्टिकोणों की अपने स्वयं के जोखिम पर अवहेलना करनी चाहिए।

मंत्री महोदय ने कहा कि साधारण व्यक्ति तथा वैज्ञानिक समुदाय के मध्य अन्तराल बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमें अनुसंधान की पुनरावृत्ति को रोकने तथा उत्साहवर्धक प्रौद्योगिकी मौलिक विकास तथा संशोधन पर केन्द्रित होने की आवश्यकता है। भारत में विज्ञान राष्ट्रीय प्राथमिकता द्वारा चालित किया जाना चाहिए। हमें उस अनुसंधान को प्राथमिकता देनी चाहिए जो उद्योगों को तीव्रता से



सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह 2015 की झलकियां

सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान 2015

श्री ए.एस. किरण कुमार, सचिव, अंतरिक्ष विभाग एवं अध्यक्ष, इसरो ने 26 सितम्बर 2015 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित 73वें सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में स्थापना दिवस व्याख्यान दिया।

श्री किरण कुमार ने देश में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की गौरवशाली विरासत पर वक्तव्य दिया। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का थुंबा में नए निर्मित लांचिंग पैड से एक छोटे अमेरिकी - नाइकी अपाचे रॉकेट की शुरुआत के साथ नवम्बर 1963 में एक छोटे पैमाने पर शुरू किया गया।

इस उपलब्धि का श्रेय अंतरिक्ष अनुसंधान की भारतीय राष्ट्रीय समिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विक्रम साराभाई को जाता है। डॉ. विक्रम साराभाई ने भारत जैसे एक बड़े और आर्थिक रूप से पिछड़े देश को नई उभरती हुई अंतरिक्ष तकनीकों से बहुत-सी समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया।

आज, इसरो ने 124 मिशनों; पीएसएलवी ने 30 मिशनों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। अपनी लगातार 30वीं सफलता में भारत के पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी-30) ने एस्ट्रोसैट के साथ फर्स्ट लॉन्च पैड से वांछित कक्षा में छह विदेशी कस्टमर सैटेलाइट को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार (एसडीएससी शार), श्रीहरिकोटा में प्रक्षेपित किया। यद्यपि अभी तक कुल 84 सैटेलाइट्स को प्रक्षेपित किया गया जिसमें से 45 विदेशी सैटेलाइट्स में हमारी प्रक्षेपण सुविधाओं का उपयोग किया गया।

चला सके, उन्होंने कहा। उन्होंने सूचित किया कि उन्होंने आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री से आन्ध्र प्रदेश के सभी जिलों में सीएसआईआर-टैक कार्यालय खोलने के लिए कहा है।

श्री चौधरी ने कहा कि भारत विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय देश बनने की राह में है। इस जनसांख्यिकीय लाभांश को उपयोग में लाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि वैज्ञानिक समुदाय ने इस पर तत्काल कार्यवाही नहीं की तो यह लोगों का विश्वास खो देगा।

श्री ए.एस. किरण कुमार, सचिव, अन्तरिक्ष विभाग तथा अध्यक्ष, इसरो ने सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने भारत के अन्तरिक्ष

कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में इसरो की विविध उपलब्धियों के विषय में चर्चा की।

अन्त में, डॉ. हर्षवर्धन ने सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार जीव विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता हेतु जी.एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक 2014 तथा 2015 तथा सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2015 प्रदान किए। इस अवसर पर शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार 2014 के विजेताओं के नामों की उद्घोषणा डॉ. गिरीश साहनी, महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा की गयी।

श्री वाई.एस. चौधरी ने देश के विभिन्न भागों से आए कृषकों को वैज्ञानिक रूप से संशोधित बीजों का वितरण किया।



स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए
डॉ. ए.एस. किरण कुमार

श्री किरण कुमार ने कहा कि वर्ष 2013 में मंगल मिशन पूर्ण रूप से स्वदेशी तकनीक से विकसित किया गया। मंगल मिशन देश के लिए एक बड़ी सफलता थी क्योंकि इसके पहले किसी भी देश की एक भी अंतरिक्ष एजेंसी पहले प्रयास में मंगल ग्रह पहुंचने में सफल नहीं हुई। श्री किरण कुमार ने इसरो की निम्नतापी क्रायोजेनिक इंजन टैक्नोलॉजी की उपलब्धियों को भी बताया। इसके अतिरिक्त, इसरो के अंतरिक्ष घटकों के स्वदेशीकरण के विषय में विस्तार से बताया।

देश में इसरो के मिशन की सफलता को जीवन के सभी तथ्यों प्राकृतिक स्रोत मानचित्रण, भौगोलिक स्थिति, दूरसंचार, मोबाइल सेवाएं, इंटरनेट सेवाएं, मौसम और यहां तक कि टेलीमेडिसिन आदि में देखा जा सकता है। देश के विभिन्न भागों में लगभग 384 अस्पतालों को छह विशेष अस्पतालों से जोड़ने के लिए टेलीमेडिसिन सेवाओं का उपयोग किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि सैटेलाइट की इनसैट सीरीज पृथ्वी प्रक्षेपण के लिए सबसे

उन्नत सैटेलाइट है। ये मौसम और चक्रवात जैसी मौसम की घटना के पूर्वानुमान में सहायक है। इसरो ने देश में अंतःदेशीय मत्स्य पालन के लिए एक सतही वॉटर मैप बनाया है।

महलानोबिस राष्ट्रीय फसल पूर्वानुमान केन्द्र को कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के संरक्षण में स्थापित किया गया। महान भारतीय सांख्यिकीविद्

पी.सी. महलानोबिस के नाम पर रखे गए इस केंद्र को अंतरिक्ष और भूस्थानिक तकनीकों (जिओस्पेशियल टैक्नोलॉजी) के उपयोग से बेहतर कृषि मूल्यांकन के लिए स्थापित किया गया।

इसरो द्वारा गांव के सरपंचों को गांव के लिए अंतरिक्ष आधारित जानकारी के समर्थन के लिए विकेन्द्रीकृत योजना हेतु समर्थ बनाने के लिए समर्थन भी प्रदान किया गया।

उन्होंने जैव विविधता और विकसित हो रहे संभावित मॉडलों के संरक्षण के लिए सीएसआईआर की कुछ प्रयोगशालाओं के साथ पारिस्थितिक तंत्र अध्ययनों के बारे में भी चर्चा की।



श्री ए.एस. किरण कुमार का अभिनन्दन करते हुए
महानिदेशक, सीएसआईआर

**श्री ए.एस. किरण कुमार,
सचिव, अंतरिक्ष विभाग,
अध्यक्ष, भारतीय अंतरिक्ष
अनुसंधान संगठन (इसरो)**



श्री ए.एस. किरण कुमार, सचिव, अंतरिक्ष विभाग और अध्यक्ष, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और 14 जनवरी 2015 से अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। इसके पूर्व वे वर्ष 2012 से 2015 तक अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अहमदाबाद के निदेशक थे। वर्ष 2012 में श्री किरण कुमार कमेटी ऑन अर्थ आब्जर्वेशन सेटेलाइट्स (सीईओएस) के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने कोऑर्डिनेशन ग्रुप ऑफ मिटीऑरलाजिकल सैटेलाइट्स (सीजीएमएस), एक्सपर्ट टीम ऑन सैटेलाइट सिस्टम्स - वर्ल्ड मिटीऑरलाजिकल ऑर्गनाइजेशन (ईटीएसएटी ऑफ डब्ल्यूएमओ) और सिविल स्पेस कॉर्पोरेशन पर इंडो-यूएस संयुक्त कार्यकारी समूह में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं।

उन्होंने परिकल्पनात्मक स्तर के बाद चन्द्रयान-1 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मार्स ऑर्बिटर मिशन की सफलता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।



विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर (एसएसबी) पुरस्कार 2015

शान्ति स्वरूप भटनागर (एसएसबी) पुरस्कार देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सबसे बहुप्रतीक्षित वैज्ञानिक पुरस्कार है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए शान्ति स्वरूप भटनागर (एसएसबी) पुरस्कार की स्थापना वर्ष 1957 में स्वर्गीय डॉ. (सर) शान्तिस्वरूप भटनागर, एफआरएस, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के संस्थापक निदेशक की स्मृति में की गयी। प्रतिवर्ष एसएसबी पुरस्कार भारत में पिछले पांच वर्षों में (पुरस्कार वर्ष से पहले के) प्राथमिक रूप से किये गये कार्यों से

हुए मानव ज्ञान तथा प्रगति में उत्कृष्ट योगदान के आधार पर दिया जाता है।

भारत का कोई भी व्यक्ति जो 45 वर्ष तक की आयु का है तथा प्रौद्योगिकी के किसी भी क्षेत्र में अनुसंधानरत है, इसके लिए पात्र होता है। बाहर रह रहे भारतीय नागरिक तथा भारतीय मूल के व्यक्ति जो भारत में कार्य कर रहे हैं, वे भी इसके पात्र हैं। एसएसबी पुरस्कार में ₹ 5 लाख का नकद पुरस्कार, एक प्रशस्तिपत्र तथा पट्टिका पुरस्कार के लिए चयनित निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्यरत प्रत्येक

व्यक्ति को दिया जाता है:

- जीवविज्ञान
- गणितीय विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- चिकित्सा विज्ञान
- भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान
- भौतिक विज्ञान
- अभियांत्रिकी विज्ञान

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लिए शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार 2015 हेतु ग्यारह वैज्ञानिकों को चयनित किया गया।

जीव विज्ञान

डॉ. बालासुब्रामणियन गोपाल
मॉलिक्युलर बायोफिजिक्स यूनिट
भारतीय विज्ञान संस्थान
बेंगलुरु - 560 012

डॉ. राजीव कुमार वाष्ण्य
सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन जीनोमिक्स
इंटरनेशनल क्रॉप रिसर्च इन्स्टिट्यूट फॉर
दी सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स (इक्रीसैट) पतनचेरु,
हैदराबाद - 502 324 (तेलंगाना)

रसायन विज्ञान

डॉ. डी श्रीनिवास रेड्डी
कार्बनिक रसायन विज्ञान विभाग
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला
पाषाण रोड, पुणे - 411 008

डॉ. प्रद्युत घोष
इंडियन एसोसिएशन फॉर दी कल्टिवेशन
ऑफ साइंस, 2-ए एंड 2-बी,
राजा एस.सी. मल्लिक रोड, जादवपुर,
कोलकाता - 700 032

भू, वायुमंडल, महासागर और भूमंडलीय विज्ञान

डॉ. ज्योतिरंजन श्रीचन्द्रन रे
जियोसाइंस डिवीजन
भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009

अभियांत्रिकी विज्ञान

डॉ. योगेश मोरेश्वर जोशी
कैमिकल इंजीनियरिंग विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
कानपुर - 208 016

गणितीय विज्ञान

डॉ. के. संदीप
टीआईएफआर, सेंटर फॉर एप्लीकेबल
मैथेमैटिक्स, शारदा नगर, येलहांका,
न्यू टाउन, बेंगलुरु - 560 065

डॉ. रीताब्रता मुंशी
स्कूल ऑफ मैथमैटिक्स

टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान
होमी भाभा रोड, मुंबई - 400 005

चिकित्सा विज्ञान

डॉ. विदिता अशोक वैद्य
जीव विज्ञान विभाग
टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान
होमी भाभा रोड, मुंबई - 400 005

भौतिकी विज्ञान

डॉ. बेदांगदास मोहंती
स्कूल ऑफ फिजिकल साइंस
राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान
भुवनेश्वर - 751 005

डॉ. मंदार मधुकर देशमुख
डिपार्टमेंट ऑफ कंडेन्सड मैटर
फिजिक्स एंड
मैटिरियल साइंस
टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान
होमी भाभा रोड, मुंबई - 400 005



सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2015

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में आंतरिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1987 में सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कारों की स्थापना की गयी। 26 सितम्बर को मनाए जाने वाले सीएसआईआर स्थापना दिवस पर वार्षिक रूप से यह पुरस्कार निम्नलिखित विषयों में दिया जाता है:

- जीव विज्ञान
- भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- इंजीनियरिंग विज्ञान
- भौतिक विज्ञान (इंस्ट्रुमेंटेशन सहित)

इस पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र, एक पट्टिका तथा ₹ 50,000 का एक नकद पुरस्कार दिया जाता है। सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार विजेताओं को पांच वर्ष की अवधि के लिए प्रतिवर्ष ₹ 5 लाख का अनुसंधान अंशदान तथा प्रतिमाह ₹ 7500 (सात हजार पांच सौ मात्र) का एक मानदेय भी 45 वर्ष तक की आयु तक अधिकृत है।

वर्ष 2014 तक 171 वैज्ञानिकों को (21 महिला वैज्ञानिकों सहित) सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। जिनमें से 17 वैज्ञानिकों को प्रतिष्ठित शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। उत्कृष्ट वैज्ञानिकों सहित सलाहकार समिति ने सीएसआईआर युवा

वैज्ञानिक पुरस्कार 2015 के लिए निम्न छह वैज्ञानिकों की संस्तुति दी।

जीवविज्ञान

डॉ. मोहम्मद फारुक

सीएसआईआर-जीनोमिकी एवं समवेत जीवविज्ञान संस्थान, दिल्ली के डॉ. मोहम्मद फारुक को जीनोम बहिरोम अनुक्रमण क्रियाविधि के उपयोग से भारतीय जनसंख्या में अज्ञात गतिविभ्रम के आनुवंशिक आधार (डी जेनेटिक बेसिस ऑफ अनोनन अटैक्सीअस इन दी इंडियन पॉपुलेशन यूजिंग जीनोम एकजोम सीक्वेंसिंग मैथडोलाजी) को समझने के उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2015 दिया गया। उनके कार्य से आनुवंशिक रोगों के इस जटिल क्षेत्र में असामान्य आनुवंशिक विकारों के आण्विक अभिलक्षणन में मदद मिलेगी।

डॉ. सुमित घोष

सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधि एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ के डॉ. सुमित घोष को तुलसी में औषधीय रूप से महत्वपूर्ण पेंटासाइक्लिक ट्राइटरपीनों के जैवसंश्लेषण की नई अंतदृष्टि और क्लाइमेक्ट्रिक एवं नॉनक्लाइमेक्ट्रिक गूदेदार फलों को नम बनाने की प्रक्रिया (नोबेल इनसाइट इन टू बायोसिन्थेसिस ऑफ मेडिसिनली इम्पोर्टनर पेंटासाइक्लिक ट्राइटरपींस इन दी स्वीट बेसिल एंड सॉफ्टनिंग प्रोसेस इन क्लाइमेक्टोरिक एंड नॉनक्लाइमेक्टोरिक

फ्लेशी फ्रूट्स) उपलब्ध कराने के उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए उन्हें सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2015 दिया गया।

भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान

कोई पुरस्कार नहीं।

रसायन विज्ञान

डॉ. बहावल अली शाह

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू के डॉ. बहावल अली शाह को जैव-सक्रिय अणुओं के लिए नई कृत्रिम विधियों के विकास एवं प्राकृतिक उत्पादों के पृथक्करण (आइसोलेशन ऑफ नेचुरल प्रोडक्ट्स एंड डवलपमेंट ऑफ न्यू सिंथेटिक मैथडोलाजी फॉर बायो-एक्टिव मॉलिक्यूल्स) में महत्वपूर्ण योगदानों के लिए रसायन विज्ञान का सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2015 दिया गया।

अभियांत्रिकी विज्ञान

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली के डॉ. भानु प्रताप सिंह को रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्रों में कार्बन आधारित नैनो संरचनाओं और मिश्रणों और संरचना, ऊर्जा एवं ईएम शील्डिंग के अनुप्रयोगों के सामर्थ्य के प्रदर्शन के लिए कृत्रिम विधियों के विकास

(कार्बन बेस्ड नैनोस्ट्रक्चर एंड कम्पोजिट्स एंड डिमासट्रेटिंग दियर पोटेन्शियल फार स्ट्रक्चरल, एनर्जी एंड ईएम शील्डिंग एप्लीकेशन्स इन डिफेंस एंड एयरोस्पेस सैक्टर्स) में उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए अभियांत्रिकी का सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2015 दिया गया।

भौतिकी विज्ञान (इन्स्ट्रुमेंटेशन सहित)

डॉ. शुभादीप डे

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली के डॉ. शुभादीप डे को नए डिजाइन और प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत में पहली ऑप्टिकल आयन क्लॉक (लेइंग सॉलिड फाउंडेशन फॉर दी क्रिएशन ऑफ फर्स्ट ऑप्टिकल आयन क्लॉक इन इंडिया थ्रू इनोवेशन डिजाइन

एंड टेक्नोलाजी) के निर्माण के लिए भौतिक विज्ञान (इन्स्ट्रुमेंटेशन सहित) का सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2015 दिया गया। नेक्स्ट जेनेरेशन टाइम स्टैंडर्ड के विकास की दिशा में उनका कार्य अनुकरणीय है।

डॉ. उदित नारायण पाल

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी के डॉ. उदित नारायण पाल को देश में जलशोधन की आवश्यकता के लिए एक किफायती मरकरी रहित हरित तकनीक वीयूवी/यूवी प्रकाशस्रोत की संकल्पना एवं उसके निर्माण और महत्वपूर्ण एवं औद्योगिक अनुप्रयोगों हेतु नई प्लाज्मा डिवाइस विकसित करने में उत्कृष्ट योगदानों के लिए सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2015 दिया गया।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार
ईमेल: deeksha@niscair.res.in



सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. हर्षवर्धन, श्री वाई.एस. चौधरी, श्री ए.एस. किरण कुमार तथा डॉ. गिरीश साहनी के साथ

सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2015

वर्ष 1990 में स्थापित सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार की स्थापना, प्रौद्योगिकी विकास, हस्तांतरण, तथा व्यवसायीकरण के लिए गृहित बहुआयामी प्रयासों तथा बाह्य वार्ता को पोषित करने तथा बढ़ावा

देने के लिए की गयी थी। प्रत्येक प्रौद्योगिकी पुरस्कार में 2 लाख का नगद पुरस्कार दिया जाता है। इसके अतिरिक्त एक शॉल तथा प्रशस्ति पत्र भी पुरस्कार विजेताओं को दिया जाता है। पंचवर्षीय योजना अवधि

के सबसे महत्वपूर्ण सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार हेतु 5 लाख रुपए का नगद पुरस्कार एवं अन्य सभी में 2 लाख रुपए का नगद पुरस्कार के अतिरिक्त पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को एक प्लाक प्रदान किया जाता है।

जीव विज्ञान के लिए प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधि एवं संगंध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ ने सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ, सीएसआईआर-सीडीआरआई, लखनऊ और सीएसआईआर-आईआईसीबी, कोलकाता की टीम के सहयोग से दक्षिणी पठार के अर्द्धशुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में छोटे और सीमांत किसानों की अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए औषधीय महत्वपूर्ण अश्वगंधा की खेती के



प्रोत्साहन और उन्नत किस्मों के विकास हेतु जीव विज्ञान के लिए प्रौद्योगिकी पुरस्कार जीता। पारंपरिक फसलों की तुलना में प्रभावी विस्तार गतिविधियों के साथ

विकसित युग्मित अश्वगंधा किस्मों की खेती के तहत इस क्षेत्र में वृद्धि हुई है और दक्षिणी पठार के अर्द्धशुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के 6300 से अधिक

छोटे और सीमांत किसानों (पांच जिलों में 53 समूहों) की आय में दुगुने से अधिक वृद्धि द्वारा उनके जीवन को एक नई दिशा दी।

अभियांत्रिकी सहित भौतिक विज्ञान हेतु प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रसायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे ने बायोडीजल की सतत प्रक्रिया और ठोस उत्प्रेरक के विकास हेतु अभियांत्रिकी सहित भौतिक

विज्ञान के लिए यह पुरस्कार जीता है। सीएसआईआर-एनसीएल ने बायोडीजल उत्पादन के लिए एक हरित प्रक्रिया विकसित की है, जो एक ट्रेडमार्क युक्त,

ठोस, पुनःउपयोगी, एसिड उत्प्रेरक और एक सतत फिक्सड - बेड प्रक्रिया पर कार्यरत है। पारंपरिक प्रक्रिया के विपरीत सीएसआईआर-एनसीएल प्रक्रिया उच्च

पैदावार और अधिक चयनात्मकता में अखाद्य तेलों और पशु वसा की एक किस्म को बायोडीजल में बदल देता है। इस प्रक्रिया को बेनेफ्यूल आईएनसी, यूएसए द्वारा लाइसेंस दिया गया है। सीएसआईआर ने प्रायोगिक संयंत्र निर्माण, संचालन और प्रौद्योगिकी के व्यवसायीकरण हेतु बेनेफ्यूल आईएनसी के योगदानों को मान्यता प्रदान की है।



नवोन्मेष हेतु प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर-केन्द्रीय कांच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान (सीजीसीआरआई), कोलकाता एवं सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआई), चैन्ने ने नवोन्मेष के लिए संयुक्त रूप से पुरस्कार जीता। सीएसआईआर-सीजीसीआरआई ने यह पुरस्कार पूरी तरह से पैक सभी फाइबर अधिसांतत्यक प्रकाश स्रोत (कम्पलीटली पैकेज्ड ऑल-फाइबर सुपरकॉन्टिनम लाइट सोर्स) के विकास के लिए और सीएसआईआर-सीएलआरआई ने तेजी से स्किन मैट्रिक्स के फाइबर खोलने के लिए एन्जाइम सूत्रीकरण के विकास हेतु यह पुरस्कार जीता।

सीएसआईआर-सीएलआरआई ने चर्म और खाल (हाइड एंड स्किन) के फाइबर खोलने के लिए एक एन्जाइम संरूपण



विकसित किया जो एक धीमी और तीव्र रासायनिक प्रदूषण प्रक्रिया का एक अनुकूल

और तीव्र प्रक्रिया में परिवर्तित करना सुनिश्चित करता है। यह इस प्रकार की



विश्व की पहली तकनीक है जो 30 मिनट में फाइबर खोलती है जबकि पारंपरिक तकनीक में कई घंटे/दिन लगते हैं। रासायनिक प्रक्रिया की तुलना में इस एंजाइमी फाइबर खोलने की प्रक्रिया में पानी की केवल एक तिहाई मात्रा की आवश्यकता होती है, परिणामस्वरूप पानी और प्रवाह उपचार की लागत में कमी आती है।

व्यापार विकास और प्रौद्योगिकी विपणन हेतु प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (एनएमएल), जमशेदपुर ने ज्ञानाधार के व्यापार और विपणन को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने हेतु यह पुरस्कार जीता।

सीएसआईआर-एनएमएल ने अद्वितीय राजस्व उत्पादन के मॉडल को अपना कर, प्रमुख साझेदारों के साथ मजबूत संबंधों के निर्माण और नवाचारी पद्धतियों के माध्यम से अपने ज्ञानाधार के व्यापार को पर्याप्त रूप से बढ़ाया। सीएसआईआर-

एनएमएल ने विभिन्न नई कूटनीतियों और व्यापार मॉडल के लिए क्रॉस-स्केल तकनीक के विकास, मूल्य निर्धारण और अपने ज्ञानाधार की साझेदारी,



प्रौद्योगिकियों के विपणन और उद्योगों द्वारा अपने ढांचागत संसाधनों के उपयोग से जिसने पांच वर्ष की अवधि में उसके बाहरी नकदी प्रवाह (इक्सटर्नल कैश फ्लो)

में 50-60 प्रतिशत से अधिक एक स्थाई और संचयी विकास का मार्ग प्रशस्त किया है, को अपनाया है।

पंचवर्षीय योजना अवधि की सबसे महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी हेतु प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी), देहरादून और सीएसआईआर-राष्ट्रीय वांतिरिक्ष प्रयोगशालाएं (एनएएल), बंगलुरु को संयुक्त रूप से पंचवर्षीय योजना अवधि की सबसे महत्वपूर्ण सीएसआईआर प्रौद्योगिकी के लिए यह पुरस्कार दिया गया। सीएसआईआर-आईआईपी ने यह पुरस्कार एलपीजी को नम बनाने और हल्के पेट्रोलियम भागों के लिए थॉक्सकैट ईएस (Thoxcat ES) नामक एक नए उत्प्रेरक की तकनीक विकसित करने के लिए और सीएसआईआर-एनएएल ने स्वदेशी अत्याधुनिक एरोस्पेस क्लास आटोक्लेव प्रौद्योगिकी के विकास हेतु यह पुरस्कार जीता।

सीएसआईआर-आईआईपी ने बीपीसीएल के साथ 5ppm स्तर के नीचे एलपीजी में उपस्थित मरकैप्टन को हटाने के लिए एक विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धी उत्प्रेरक ट्रेड थॉक्सकैट ES™ को विकसित किया। यह आविष्कार भारत, यूएस, यूके और फ्रांस में कई पेटेंट द्वारा संरक्षित है। यह उत्प्रेरक बहुत-सी भारतीय रिफाइनरी में व्यवसायीकृत किया जा रहा है और अभी यह पांच वर्षों से भी अधिक समय से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। हाल ही में इसे ओमान की सोहर रिफाइनरी को निर्यात किया गया है। तकनीकी रूप से बेहतर थॉक्सकैट ESTM बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के एकाधिकार को तोड़ने में सफल रहा है तथा सरकार के जनादेश मेक इन इंडिया का प्रतिदर्श है।



सीएसआईआर-एनएएल ने विभिन्न नवाचारी गुणों के साथ एक उच्च तापमान एवं उच्च दाब आटोक्लेव सहित एक बड़े स्वदेशी अत्याधुनिक आटोक्लेव का विकास एवं निर्माण किया है। इन आटोक्लेव ने राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण विमान कार्यक्रमों जैसे - तेजस/एलसीए (लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट) और सारस के लिए उन्नत कंपोजिट संरचनाओं के विकास और

उत्पादन के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। इसके अतिरिक्त इससे राजस्व के उत्पादन, भारतीय औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र में विकास, रोजगार सृजन (लगभग एक लाख मानव घंटे) और आटोक्लेव जीवनचक्र समर्थन और मिश्रित अनुसंधानों विकास के अनुसार बहुत से संघयी लाभ और विकसित तकनीकों के परिणामस्वरूप आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है।

जीवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता के लिए जी.एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक - 2014 एवं 2015

जीवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अंतर्विषयक जीवविज्ञान के संस्थापक एवं प्रोटीन द्वारा जी.एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक का विषय/ क्षेत्र में उत्कृष्टता को मान्यता कैमिस्ट्री के अग्रणी प्रो. जी.एन. रामाचन्द्रन आरम्भ किया गया। देने के लिए भारत में संरचनात्मक की स्मृति में वर्ष 2004 में सीएसआईआर

वर्ष 2014 के लिए जी. एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक

प्रो. उमेश वार्ष्णेय

जीवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2014 का जी. एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रो. उमेश वार्ष्णेय को दिया गया। प्रो. वार्ष्णेय ने मानव स्वास्थ्य में निहित प्रोटीन स्थानांतरण (प्रोटीन ट्रांसलेशन) की क्रियाविधि को समझने में उत्कृष्ट योगदान दिया है।



वर्ष 2015 के लिए जी. एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक

डॉ. राजन शंकरनारायणन

जीवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2015 का जी. एन. रामाचन्द्रन स्वर्ण पदक सीएसआईआर-कोशिकीय एवं आण्विक जीवविज्ञान केंद्र, हैदराबाद के डॉ. राजन शंकरनारायणन को संरचनात्मक जीवविज्ञान के क्षेत्र में जेनेटिक कोड के ट्रांसलेशन के दौरान प्रूफरीडिंग की मौलिक प्रक्रिया में शामिल आण्विक क्रियाविधियों को स्पष्ट करने के उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए दिया गया है।



ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार-2014

डॉ. गिरीश साहनी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने 26 सितम्बर 2015 को सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधि सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) में वेटिवर (खसखस) आधारित प्रौद्योगिक नवाचारों के माध्यम से कृषि समुदायों की आय बढ़ाने के एक कार्यक्रम में सीएसआईआर-अवार्ड फॉर एस एंड टी इनोवेशन फॉर रूरल डवलपमेंट (सीएआईआरडी)-2014 प्रदान करने की घोषणा की।

सीएसआईआर ने ग्रामीणों के जीवन को बदलने में सहायक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवोन्मेष को मान्यता और सम्मान देने के लिए वर्ष 2006 में ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार आरम्भ किया। यह पुरस्कार बुनियादी स्तर पर वास्तविक नवाचारों और उनके कार्यान्वयन के माध्यम से ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने का प्रयास है। इस पुरस्कार में प्रशस्ति-पत्र, दस लाख रूपए नकद और एक शील्ड प्रदान की जाती है।

सीएसआईआर-निस्केयर ने 73वां सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना संस्थान (निस्केयर) ने 26 सितम्बर 2015 को बड़े उत्साह के साथ 73वां सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया। समारोह का आयोजन डॉ. ए.पी. शिंदे सभागार, एनएएससी कॉम्प्लेक्स में किया गया था, जिसका शुभारम्भ श्रीमती दीक्षा बिष्ट, कार्यकारी निदेशक, श्री जगदीश बिष्ट, आमंत्रित अतिथि, डॉ. जी. मिश्रा, वित्त एवं लेखा अधिकारी तथा श्रीमती कमलेश अरोड़ा, अध्यक्ष, सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह समिति ने दीप-प्रज्वलित कर किया। श्रीमती अरोड़ा ने अतिथि, स्टाफ सदस्यों तथा उनके परिवारजनों का इस अवसर पर स्वागत किया।



श्रीमती दीक्षा बिष्ट, निदेशक, निस्केयर दीप-प्रज्वलित करते हुए

अपने उद्बोधन में श्रीमती बिष्ट ने पिछले एक वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा



श्रीमती कमलेश अरोड़ा, अध्यक्ष, सीएसआईआर-स्थापना दिवस समारोह समिति स्वागत सम्बोधन देते हुए



श्रीमती दीक्षा बिष्ट, निदेशक, निस्केयर सभा को सम्बोधित करते हुए



अर्जित की गयी उपलब्धियों के विषय में जानकारी दी। उन्होंने सूचित किया कि निस्केयर स्थित भारतीय आईएसएसएन केन्द्र को अंतरराष्ट्रीय आईएसएसएन एजेंसी द्वारा अपने 40वें वार्षिक समारोह में सर्वश्रेष्ठ केन्द्र का पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी पदों हेतु भर्ती प्रक्रिया का दस वर्ष के पश्चात आरम्भ किया गया है। संस्थान में एक ओर बड़ी संख्या में सेवानिवृत्ति के कारण और वहीं दूसरी ओर नए कार्मिकों की भर्ती न होने के कारण जनशक्ति का ह्रास हुआ है। 28 वैज्ञानिक पदों का अनुमोदन तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्टाफ की भर्ती संस्थान की जनशक्ति की पदस्थिति को थोड़ी राहत प्रदान करेगी। उन्होंने कुछ विभागों में किए गए नवीनीकरण कार्य जिसमें पूसा परिसर के लोकप्रिय विज्ञान तथा पीरियोडिकल्स डिविजन, समिति कक्ष, निदेशक सचिवालय, प्रिंटिंग अनुभाग, तथा एसवी मार्ग परिसर में सीढ़ियों तथा कैटीन के नवीनीकरण के कार्य को भी निर्दिष्ट किया। उन्होंने सभी को प्रिंटिंग के लिए क्रय किए गए नवीनतम उपकरण यथा पेपर कटिंग मशीन एवं कम्प्यूटर टू प्लेट (सीटीपी) सुविधा के विषय में बताया जिससे गुणवत्ता उत्पादन तथा प्रिंटिंग हेतु सुविधा प्राप्त होगी। उन्होंने नियमित रूप से आयोजित किए जाने वाले अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के

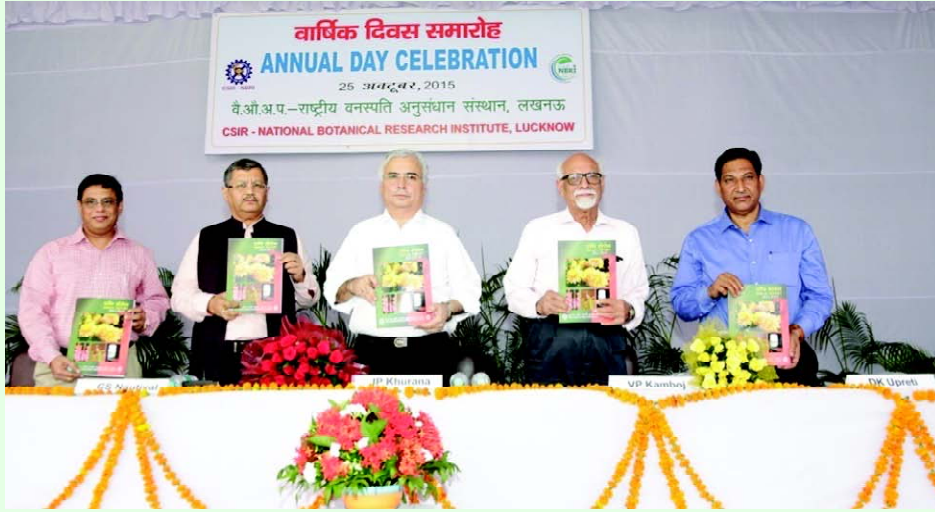
अतिरिक्त क्षेत्रीय समाचार-पत्रों के पत्रकारों के लिए आयोजित की गयी तीन दिवसीय कार्यशाला के विषय में भी जानकारी दी। स्वच्छ भारत अभियान में निस्केयर की भागीदारी को निर्दिष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि निस्केयर ने भी अपने 20 वर्ष से पुराने फर्नीचर का निपटान किया है तथा उस खाली हुए स्थान पर एक सुंदर नर्सरी का विकास किया है।

समारोह के दौरान, सीएसआईआर-निस्केयर स्टाफ के सदस्यों, जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं तथा उन्हें जिन्होंने पिछले वर्ष अपनी सेवा के 25 वर्ष पूर्ण किए हैं, को स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें निस्केयर स्टाफ तथा उनके परिवारजनों द्वारा एकल तथा समूह नृत्य, नाटिका, गाने इत्यादि प्रस्तुत किए गए, भी सम्मिलित थे। इससे पहले इस माह में स्थापना दिवस को मनाने के लिए स्टाफ सदस्यों के मध्य एकल तथा टीम खेलकूद प्रतियोगिताएं यथा बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम, वॉलीबॉल, टग ऑफ वार इत्यादि आयोजित किए गए। स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए प्रश्नोत्तरी, चित्रकला तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। समारोह का समापन विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं तथा अन्य प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने के साथ हुआ।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान द्वारा 62वां वार्षिक दिवस मनाया गया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को अपना 62वां वार्षिक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैम्पस, नई दिल्ली के प्रो. जे. पी. खुराना मुख्य अतिथि एवं सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. वी.पी. काम्बोज विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संस्थान के निदेशक डॉ. सी एस नौटियाल ने उपस्थित जनों का स्वागत करते हुये संस्थान द्वारा पिछले एक वर्ष में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के विषय में विस्तार पूर्वक बताया। अपने सम्बोधन में प्रो. खुराना ने पौधों के विकास में प्रकाश की महत्ता को देखते हुये प्रकाश के अधिकाधिक दोहन हेतु आणुविक ढांचे की संकल्पना पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि पौधों के पूरे जीवनकाल में विभिन्न अवस्थाओं के दौरान प्रकाश इन अवस्थाओं को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रकाश के दोहन हेतु पौधों में प्रकाश संवेदी यौगिकों का एक जटिल तंत्र विकसित होता है जो विभिन्न रासायनिक क्रिया-तंत्रों से संबन्धित होता है। ये तंत्र अपने प्रकाश संवेदी यौगिकों



सीएसआईआर-एनबीआरआई के वार्षिक प्रतिवेदन 2014-15 का विमोचन करते हुए



वार्षिक हिन्दी पत्रिका विज्ञानवाणी का विमोचन करते हुए

किए जाने की आवश्यकता है ताकि उत्पादों के निर्माण हेतु उद्योगों को उच्च गुणवत्ता के पौधे प्राप्त हो सकें। उन्होंने पौधों की किस्मों के विकास में किसानों के योगदान का उल्लेख करते हुये कहा कि सदियों से किसान बिना किसी तकनीकी ज्ञान के केवल पारंपरिक कृषि ज्ञान की सहायता से उन्नत किस्मों का चयन एवं विकास करते आए हैं। अतः एक प्रकार से किसान सर्वोत्तम वैज्ञानिक हैं। ऐसे में किसानों एवं वैज्ञानिकों का आपस में सहयोग आवश्यक है एवं इसी से देश का विकास संभव है।

इस अवसर पर संस्थान की वार्षिक विज्ञान पत्रिका **विज्ञानवाणी** एवं बोगेनविलिया की बागवानी पर लिखी गई एक पुस्तक का विमोचन किया गया, साथ ही बोगेनविलिया की एक नई किस्म डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जारी की गई। इसके अतिरिक्त सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान एवं सीएसआईआर-सीमैप द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किए गए एवं एमिल फार्मा प्रा. लि. द्वारा निर्मित किए जा रहे मधुमेह रोधी वैज्ञानिक उत्पाद 'BGR34' को जारी किया गया। इस अवसर पर सर्वोत्तम शोध पत्रों के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों को सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी के उप्रेती द्वारा समस्त उपस्थितजनों आदि को धन्यवाद दिया गया।

के माध्यम से न सिर्फ इन रासायनिक क्रिया-तंत्रों अपितु अनुवांशिक जींस के प्रदर्शन को भी प्रभावित करता है। इस पूरे जटिल प्रकाश तंत्र एवं इसके संघटकों की क्रिया-विधि की समझ पौधे की कार्यिकी, पुष्पन, वृद्धि, उपज आदि से संबन्धित जटिल प्रश्नों के उत्तर तलाशने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. काम्बोज ने जैव संसाधनों के तकनीक की सहायता से संदोहन एवं समाज को इसके लाभ को प्रदान करने की दिशा में संस्थान के कार्यो एवं उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुये कहा कि विभिन्न पादप आधारित उत्पादों में प्रयुक्त होने वाले पौधों की कृषि प्रौद्योगिकी को भी विकसित



डॉ. सामित चट्टोपाध्याय ने सीएसआईआर-आईआईसीबी के निदेशक का पदभार संभाला

डॉ. सामित चट्टोपाध्याय ने 25 अगस्त 2015 को सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान (आईआईसीबी), कोलकाता के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। इसके पूर्व वे राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र, पुणे में वैज्ञानिक-जी एवं एसोसिएट डीन के पद पर कार्यरत थे।

उनके शोध जीवविज्ञान की विस्तृत सीमाओं जैसे कैंसर व अन्य रोगों की पश्चजाति (एपिजेनेटिक्स); एचआईवी अनुलेखन और प्रसुप्तिकाल (लेटेन्सी) पर अणुजैविकी कार्य; माइक्रोबैक्टीरियल संक्रमण पर प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया; डीएनए डैमेज रिपेयर में न्यूक्लियर मैट्रिक्स प्रोटीन्स की भूमिका, समबंधन (स्प्लाइसिंग); एमएआर बाइंडिंग प्रोटीन्स के स्ट्रक्चर फंक्शन रिलेशन; कैंसर एवं अन्य रोगों में एमआईआरएनए प्रतिरक्षा विज्ञान आदि पर केन्द्रित हैं।

वर्ष 1959 में पश्चिम बंगाल में जन्मे डॉ. चट्टोपाध्याय ने अपनी बीएससी (1981) एवं एमएससी (1983) की डिग्री वनस्पति विज्ञान में कलकत्ता यूनिवर्सिटी से प्राप्त की। अपने पूर्व कार्यकाल में वर्ष 1984-1989 के दौरान वे सीएसआईआर-आईआईसीबी में रिसर्च स्कॉलर के रूप में कार्य कर चुके हैं और मॉलिक्युलर बायोलॉजी



और बायोकेमिस्ट्री में पीएचडी (1989) की डिग्री उन्होंने जादवपुर यूनिवर्सिटी से प्राप्त की। डॉ. चट्टोपाध्याय ने अपना पोस्ट डॉक्टरल अनुसंधान कार्य कनेक्टिकट यूनिवर्सिटी, फार्मिंगटन, यूएसए (1989-1995) और मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी), बोस्टन, यूएसए (1995-1998) से किया।

वे डीएसटी द्वारा जे.सी. बोस नेशनल फेलोशिप (2013), फेलो ऑफ नेशनल साइंस एकेडमी (एफएनए), दिल्ली (2013), फेलो ऑफ एकेडमी ऑफ साइंस (एफएएससी), बंगलुरु (2011), फेलो ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस (एफएनएएससी), इलाहाबाद (2006) और फेलो ऑफ महाराष्ट्र एकेडमी ऑफ साइंस (एफएमएएससी), 2000 के साथ

जीवविज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपने महत्वपूर्ण योगदानों के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों के प्राप्त कर्ता हैं।

उनके द्वारा विभिन्न पुस्तक अध्यायों का प्रकाशन और प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं जैसे - इम्युनिटी, ईएमबीओ जर्नल, म्यूकोसल इम्यूनोलॉजी, एनपीजी, प्रोसिडिंग ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (पीएनएस), मॉलिक्युलर एंड सेल्युलर बायोलॉजी (एमसीबी), न्यूक्लिक एसिड रिसर्च (एनएआर), जर्नल ऑफ इम्यूनोलॉजी (जेआई), जर्नल ऑफ बायोकेमिस्ट्री (जेबीसी); जर्नल ऑफ मॉलिक्युलर बायोलॉजी (जेएमबी), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बायोकेमिस्ट्री एंड सैल बायोलॉजी (आईजेबीसीबी); वायरोलॉजी आदि में उनके 70 से अधिक पेपर प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. चट्टोपाध्याय ने 20 से भी अधिक पीएचडी छात्रों को मार्गदर्शित किया है और एनसीसीएस, पुणे विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय और विद्यासागर विश्वविद्यालय में उन्होंने शिक्षण दिया है।

उन्होंने सीएसआईआर, डीएसटी, डीबीटी और अन्य राष्ट्रीय स्तर संगठनों में टास्कफोर्स और व्यावसायिक समितियों के सदस्य और विभिन्न विशेष अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया है।



सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; कम्पोजिंग: कृष्णा

प्रोडक्शन: सुप्रिया गुप्ता; डिजाइन एवं ले आउट: सरला दत्ता

फोन: 25848702, 25846301, 25846303, 25842990, 25846304-7/361 फैक्स: 25847062

ई-मेल: deeksha@niscair.res.in वेबसाइट: http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें